महामारी के काल में नागरिकता

प्रणीत गुडलडन और संकल्प कोरिपल्ली

"उन्होंने (दो विद्यार्थी) एक महत्त्वपूर्ण और काफ़ी बड़ा योगदान दिया है जिससे होसकोटे के वंचित लोगों को बड़ी मदद मिलेगी।" चन्दन, गूँज समन्वयक

नागरिकों के रूप में अपनी भूमिका अदा करने के लिए लोगों को क्या करना चाहिए? देश के नियमों और क़ानूनों का पालन करने के अलावा नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे दूसरों की ज़रूरतों को स्वीकारें और उनका सम्मान करें। स्वयंसेवा करना सामाजिक रूप से लाभप्रद कार्य है जो समुदाय को मज़बूत करता है और नागरिकता के एक मूल सिद्धान्त को कार्यान्वित भी करता है।

लोग लोकतंत्र के मूलभूत अंग हैं। भारत के पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "देश की सेवा में नागरिकता निहित होती है।" 1997 में जब यूनाइटेड किंगडम में लेबर सरकार सत्ता में आई, तो उसका लक्ष्य अपने नागरिकों को सार्वजनिक सेवाओं के महज़ आज्ञाकारी उपयोगकर्ताओं से ऐसे लोगों में बदलना था जिनका समुदाय से जुड़ाव हो और जो समुदाय के अधिक सक्रिय सदस्य बनें। नागरिकता की यह व्याख्या समुदाय को लाभ पहुँचाती है, और इससे भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह पूरे देश को लाभ पहुँचाती है।

हाल के महीनों ने समाज के कुछ वर्गों पर महामारी के गम्भीर प्रभावों के प्रति हमारी आँखें खोल दीं। जीवन में पहली बार हमने देखा कि कैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित में लगाया गया एक लॉकडाउन उन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इनमें फेरीवाले, दिहाड़ी मज़दूर और छोटे कारोबारी शामिल थे। हालाँकि सरकार राहत पहुँचाने के उपाय कर रही थी, पर समाज के चिन्तित और समानुभूतिक सदस्य होने के नाते हम कुछ करना चाहते थे।

हमने प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए विभिन्न तरीक़ों का पता लगाना शुरू किया। थोड़ी खोजबीन के बाद हमने 'गूँज' नामक एक नामी एनजीओ के साथ मिलकर काम करने का फ़ैसला किया। उनके पास दान वितरण का एक स्थापित तंत्र है, जिससे हम आश्वस्त हुए कि सारा दान ज़रूरतमन्द लोगों के पास पहुँच जाएगा। सितम्बर में हमने कपड़े, जूते, किताबें, सूखा राशन, तेल, स्टेशनरी, बैग और कम्बल जैसी विभिन्न आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा करने के लिए बेंगलूरु के कई इलाक़ों में एक दान अभियान चलाने का प्रस्ताव रखा।

जब हमने शुरुआत की तब यह संशय था कि यह योजना अच्छी है या नहीं और क्या हम पर्याप्त दान इकट्ठा कर भी पाएँगे। पर हमने साथी नागरिकों की उदारता पर भरोसा किया। महीने के अन्त तक हमने अपने सभी प्रयासों को व्हॉट्सऐप सन्देशों व ईमेल के माध्यम से दान अभियान के प्रचार पर केन्द्रित किया। हमने जोश भरी गुहार लगाई और अपने दोस्तों की मदद से अपना सन्देश आगे फैलाया। दानदाताओं द्वारा योगदान देना आसान करने के लिए हमने जगह-जगह संग्रह बक्से लगाने की योजना बनाई। गत्ते के बड़े डिब्बे मिलना एक और चुनौती थी। अभियान से एक हफ़्ते पहले हमने दोस्तों और पड़ोसियों से अनुरोध किया कि वे ऑनलाइन शॉपिंग से मिलने वाले हर डिब्बे को सँभालकर रखें। यही गुज़ारिश लेकर हम मोहल्ले के किराने की दुकान पर भी गए। दुकान मालिक ने बहुत सहयोग किया और हमें कुछ दिनों बाद वापिस आने को कहा। उपयुक्त तरीक़े से सैनिटाइज़ करने के बाद हमने इन बड़े डिब्बों को सभी सोचे गए स्थानों पर रख दिया।

जैसे-जैसे बात फैलती गई, हमें भारी मदद मिलने लगी। अपनी



अनुपयोगी चीज़ों को दान करने का मौक़ा मिलते ही लोग जैसे कूद पड़े। सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर हम दान जमा करने के लिए और ज़्यादा डिब्बे लगाने लगे और अक्टूबर के मध्य से समय-समय पर दान इकट्ठा करने लगे।

इस प्रक्रिया का अगला क़दम इस दान को बेंगलूरु में 'गूँज' के केन्द्र तक पहुँचाना था। लेकिन-बड़ी संख्या में प्राप्त हुए दान ने इस काम को मुश्किल बना दिया था। बक्सों को गाड़ियों तक पहुँचाने और बार-बार गूँज के केन्द्र तक ले जाने के लिए हमें कुछ दोस्तों व परिवार वालों की मदद की ज़रूरत पड़ी। आख़िरकार एक हफ़्ते तक भारी-भरकम बक्सों को उठाने और ले जाने की क़वायद के बाद हम दान में मिले सभी सामान को गूँज तक पहुँचा पाए। जो सामान हमने एकत्र किया था उन्हें देखकर वे बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने वादा किया कि वे इन मूल्यवान चीज़ों को ज़रूरतमन्द लोगों तक पहुँचा देंगे।

ज़रूरतमन्द लोगों की मदद करने से जुड़ाव और अपनेपन की मनोवैज्ञानिक भावना पैदा होती है। एक अच्छा नागरिक इस भावना की क़द्र करता है और इसे अपनाता है। एक सच्चा नागरिक वही है जो सक्रिय रूप से समुदाय में अपनी भूमिका निभाए और समुदाय के सभी सदस्यों के प्रति समानुभूति रखे। हम मानते हैं कि किसी सत्ता के प्रति अन्धी निष्ठा दिखाने के बजाए नगरीय समुदाय से जुड़ना हमारी ज़िम्मेदारी है। लोग नागरिकता की भावना अपनाते हैं जब वे अपने निजी कार्यों के साथ ही अपने पड़ोसियों की भलाई का भी ध्यान रखते हैं। सामुदायिक सेवा करने से लेकर कार्यक्रमों और त्यौहारों के आयोजन तक, समुदाय की सहायता करने तथा उसे मज़बूत करने के लिए की गई हर गतिविधि इस भावना को विकसित करती है।





प्रणीत गुडलडन द इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलुरु में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र हैं। उनसे gpraneet@tisb.ac.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।



संकल्प कोरिपल्ली द इंटरनेशनल स्कूल बेंगलूरु, में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र हैं। उनसे ksankalp@tisb.ac.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी